विज्ञप्ति

पुलिस मुखबिरों! अपनी गलती के बारे में जरा सोचो, समझो!

भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के उन्मूलन के लिए केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा विगत 20 महीनों से 'समाधान' के नाम पर प्रतिक्रांतिकारी हमलें जारी हैं. इसके तहत पुलिस द्वारा डरा-धमका कर, कई तरह के लालच दिखा कर, धोखा देकर कुछ लोगों को मुखबिर बनाया जा रहा है. पुलिस की धोखेबाजीपूर्ण बातों पर विश्वास करके या डर के मारे कुछ लोग नारायणपुर, कोंडगांव, जगदलपुर, पखांजूर, कोयलीबेडा व प्रतापुर जाकर पुलिस बलों के साथ रह रहे हैं. उनमें से ज्यादातर लोग शोषित जनता हीं है. उनसे हमारी गुजारिश है कि वे अपने जनविरोधी व प्रतिक्रांतिकारी काम छोड़ कर फिर अपने-अपने गांवों में आकर अपने रिश्तेदारों व जनता के साथ मिलकर आत्मसम्मान की जिंदगी बिताएं.

आखिर आप लोग मुखबिर क्यों बन गए?

क्रांतिकारी आंदोलन गरीब व उत्पीड़ित जनता के जल-जंगल-जमीन व अधिकार के लिए ही जारी है. वह हमारे देश व जनता की संपत्ति व संसाधनों को लूटने व उनका शोषण करने वाले देशी, विदेशी बड़े पूंजीपतियों और बड़े जमींदारों के खिलाफ है. आप लोग न तो देश या विदेशी बड़े पूंजीपति हैं ना हीं बड़े जमींदार/मालगुजार हैं. फिर आप लोग क्यों मुखबिर बन गए हैं? एक बार सोचें.

गांव छोड़ कर आप लोग भागे क्यों?

हमारी पार्टी - भाकपा (माओवादी) या जनताना सरकार ने आपकी जमीन नहीं छीनी. आपके पशु-पक्षियों को नहीं बांटा. आपके घरों को नहीं जलाया. फिर आप लोग अपनी जमीन, संपत्ति व जानवरों को छोड़ कर क्यों भाग रहे हैं. आप लोग अपने गांवों में लौटकर खेती करते हुए बाल-बच्चों के साथ साधारण जिंदगी बिताओ.

क्या पार्टी या पीएलजीए ने आपके साथ कभी मार-पीट की? कभी गाली-गलौज की?

नहीं, तो हमारी अपनी पार्टी व पीएलजीए पर आपके गुस्से का मतलब क्या है? अगर गलत आरोप लगाकर आप के साथ मार-पीट की गई या गाली दी गई तो, पार्टी या जनताना सरकार की नजर में लाने से पार्टी, सेना या सरकार अपनी गलती मान लेती है. आप लोगों को भी अच्छी तरह से पता है कि विगत में अपने द्वारा हुई गलतियों को पार्टी ने न सिर्फ मान लिया बल्कि माफी भी मांगी थी.

किसे मारने के लिए आप लोग पुलिस के साथ हाथ मिला रहे हैं?

हमारी पार्टी व पीएलजीए के ज्यादातर लोग इसी धरती पर पैदा हुई आदिवासी, गैर-आदिवासी संतान हैं. इनमें से कई लोग आपके सगे-संबंधी व रिश्तेदार हैं. क्या अपने भाई-बहनों व बेटियों-बेटों को मारने के लिए मुखबिर बनना आप लोग उचित समझ रहे हैं?

क्या आप लोगों को गुलामी व रोजी-मजदूरी की जिंदगी मंजूर है?

आप लोग इस जल-जंगल-जमीन के मालिक हैं. लेकिन आपको यहां से खदेड़ कर इस संपत्ति पर लुटेरे वर्ग कब्जा करना चाहते हैं. हम सब ने एकजुट होकर लड़ते हुए अभी तक इस संपत्ति को बचाया है. इस आंदोलन को कमजोर करने के लिए दुश्मन हमारे बीच में फूट डाल रहा है. आपको मुखबिर बना कर आंदोलन के विरोध में खड़ा कर रहा है. अगर हमारा आंदोलन कमजोर हो गया, तो जिस धरती का आप मालिक हैं उसी धरती पर आप लोग कूली या गुलाम बनेंगे. क्या अपनी ही धरती पर गुलाम बनकर जीना पसंद करेंगे?

विस्थापन व विनाशकारी विकास क्या आप लोगों को मंजूर है?

दंडकारण्य में निक्षिप्त अकूत संपदाओं के दोहन के लिए खदान खोल कर, सड़क व रेलवे लाइन बिछा कर यहां के अधिकतर लोगों को विस्थापित करके, कुछ ही लोगों को नौकरी देने को क्या आप विकास मानते हैं? इसी विकास को आगे बढ़ाने मुखबिर बन कर आप लोग लुटेरों का साथ देने तैयार हो रहे हैं. इसका सीधा मतलब है, अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारना. अपनी ही उंगलियों से अपनी आंखे फोड़ना. क्या लुटेरी सरकारों की ऐसी साजिश का हिस्सा बनना गलत नहीं है?

क्या आप लोग अपनी माताओं, बहनों व बेटियों पर पुलिस बलों के अत्याचारों का समर्थन करेंगे? इसमें उनकी मदद करेंगे?

जिन पुलिस बलों द्वारा दंडकारण्य की मांओं, बहनों व बेटियों के साथ अनगिनत अत्याचार किए जा रहे हैं उन पुलिस बलों के मुखबिर बन कर क्या आप आपनी मांओं, बहनों व बेटियों का अपमान नहीं कर रहे हैं? जरा दिमाग पर जोर डालकर सोचो कि आप लोग कैसे बेटे हो? कैसे भाई हो? कैसे बाप हो?

गांव छोड़ कर गए लोग कैसी जिंदगी बिता रहे हैं?

पुलिस की बातों के चक्कर में पड़ कर नारायणपुर या अन्य शहरों में गए मुखबिरों, गद्दारों, जन विरोधियों की जिंदगियां कैसी हैं? अब वो लोग अपना आत्मसम्मान खो कर कुत्तों की जिंदगी जीने मजबूर हैं. गांव, रिश्ते-नातों से दूर, दर-दर भटकते हुए, जनता की थू-थू झेलते हुए, साहब लोगों की जी-हुजूरी करते हुए, बेइज्जत होकर जीना भी कोई जीना है? क्या आप भी ऐसी जिंदगी चाहते हैं?

आत्मसम्मान के साथ जीने का मौका अभी भी आपके सामने मौजूद है!

पुलिस बलों के इस प्रचार कि पुलिस कैंपों में रह कर, पुलिस बलों के साथ घूम कर अपने गांवों में लौटने वालों को माओवादी मारते हैं, का क्या आप लोग यकीन करते हैं? बिल्कुल मत करो. आप लोगों को भी पता है कि अपनी गलती को मानने वाले कितने ही लोगों को पार्टी व जनताना सरकार ने छोड़ दिया. उन्हें अपने गांवों में पहले जैसे जीने का मौका दिया.

इसलिए गांवों में रह कर मुखबिरी करनेवालों से हमारी अपील है –

'आप लोग तुरंत इस घृनित काम छोड़कर जनताना सरकार के सामने गलती मानकर अच्छे से जिएं.'

पुलिस कैंपों में रहने वाले मुखबिरों से हमारी अपील है –

'आप लोग उस काम व उन कैंपों को छोड़ कर अपने गांव वापस आओ. अपनी गलती मान लो. पार्टी, पीएलजीए व क्रांतिकारी जनताना सरकार आप लोगों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएंगी. गद्दारों के साथ कोई रिश्ता न रखें, उनके घरों में न रुकें, उनके या लुटेरी सरकार की झूठन के लालच में न रहें, उस पर न जिएं. अपने जल-जंगल-जमीन को बचाकर उसका मालिक बनकर जिएं.'

गुंडाधुर आदि महान वीरों के वारिस बनकर जियो.

जल, जंगल, जमीन, इज्जत, अधिकार के लिए डट कर लड़ कर अपनी जान की कुरबानी देने वाले गुंडाधुर, गेंदसिंग, सडमेक बाबूराव आदि महान योद्धाओं के वारिस हैं, दंडकारण्य के माटी पुत्रिकाएं और पुत्र. आप लोगों को उनके रास्ते पर ही चलना चाहिए न कि सुक्कू नरोटी जैसे गद्दरों के रास्ते पर. महान भूमकाल की विरासत को आगे ले जाते हुए क्रांतिकारी जनताना सरकारों का हिस्सा बनो.

क्रांतिकारी जनताना सरकार किसके लिए?

आप जैसे गरीब व उत्पीड़ित लोगों के लिए. लुटेरे वर्गों के लिए, लुटेरे वर्गों द्वारा चलने वाली लुटेरी सरकार के विकल्प के रूप में मजदूर, किसान, पेटी बुर्जुआ व राष्ट्रीय बुर्जुआ के संयुक्त मोर्चे के रूप में हमारी धरती पर क्रांतिकारी जनताना सरकार उदीयमान है. वह यहां लुटेरे वर्गों द्वारा जारी लूट को रोक कर, यहां की जनता के स्वावलंबन पर आधारित असली विकास के लिए कोशिश कर रही है. उसे बनाए रखना, बचाए रखना, मजबूत करना व उसका विस्तार करना न सिर्फ आप लोगों की बल्कि अपने प्यारे बच्चों की सुनहरी भविता के लिए आवश्यक है.

इसीलिए मुखबिरी छोड़ कर आओ! मुखबिर न बनो, अपने जल-जंगल-जमीन को कब्जा में लेने दुश्मन का साथ मत दो, पार्टी, पीएलजीए, जनताना सरकारों को नुकसान मत पहुंचाओ.

क्रांतिकारी अभिनंदन के साथ,
उत्तर बस्तर डिविजनल कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी).

दिनांक – 20 जनवरी, 2019